ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

डेरी पशुओं में कठिन प्रसव के कारण एवं निवारण

डॉ. संजय कुमार मिश्र

उपनिदेशक पशुधन विकास, पशुपालन निदेशालय उत्तर प्रदेश लखनऊ

प्रसव की तीन अवस्थाएं होती हैं: (1) गर्भाशय ग्रीवा का शिथिल होकर चौड़ा होना, (2) गर्भाशय के संकुचन बढ़ना एवं बच्चे का बाहर आना, (3) प्लेसेंटा/जेर का बाहर निकलना। सामान्य प्रसव में मादा पशु के योनि द्वार पर पहले पानी की थैली दिखाई पड़ती है, फिर दोनों आगे की टांगें और बीच में घुटनों पर बच्चे का सर दिखाई देता है। 2 से 4 घंटे में बच्चा बाहर आ जाता है।

कठिन प्रसव

जब बच्चा देने के समय माँ स्वयं बच्चे को बाहर नहीं निकाल पाए और बच्चा बीच में ही फँस जाए अर्थात बच्चा देने की पहली व दूसरी अवस्था में समय लगे और बच्चे को बाहर निकालने के लिए बाहरी सहायता की आवश्यकता पड़े तो इसे कठिन प्रसव कहते हैं।

कठिन प्रसव के कारण

मूल कारण:

- अनुवांशिक
- पोषण व रखरखाव
- संक्रमण
- चोट

मात्रजन्य कारण:

- I.C.D. – हार्मोन के अभाव या असंतुलन से गर्भाशय ग्रीवा का न फैलना

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- Narrow Pelvis – कम उम्र में कृत्रिम गर्भाधान, शरीर की अपर्याप्त वृद्धि
- गर्भाशय की ऐंठन (Uterine Torsion)
- Uterine Inertia / गर्भाशय की जड़ता – गर्भाशय के संकुचन की अनुपस्थिति या कमी
- अत्यधिक मोटापे से योनि में वसा का अत्यधिक जमाव

बच्चे के कारण कठिन प्रसव:

- बच्चे की असामान्य स्थितियाँ: आड़ा या तिरछा (Transverse एवं Vertical)
- बच्चे का असामान्य बड़ा आकार – उच्च नस्ल के सांड का उपयोग (JERSEY X HF)
- बच्चे के शरीर का असामान्य होना जैसे 2 सिर होना, 4 से अधिक पैरों का होना
- बच्चे के शरीर में विभिन्न रोग: Hydrocephalus, Dropsy, Anasarka आदि
- जुड़वाँ गर्भ, मृत बच्चा

कठिन प्रसव की पहचान के लक्षण

- 2 से 3 घंटे से अधिक समय तक प्रसव में प्रगति न होना
- पानी की थैली फटने के बाद भी बच्चा बाहर न निकलना
- पशु को अत्यधिक दर्द व बेचैनी एवं अत्यधिक कमजोरी महसूस होना
- बच्चे का असामान्य भाग दिखलाई देना

बचाव हेतु पशुपालकों को क्या करना चाहिए

- संतुलित पोषण प्रबंधन: गर्भावस्था के अंतिम 2 महीनों में मिनरल मिक्सर दें
- उचित सायर/सांड़ चयन करें
- शरीर दशा स्कोर BCS 3-3.5 बनाए रखें
- कृत्रिम गर्भाधान की तिथि लिखें
- गर्भ जांच 60-90 दिन पर अवश्य करवाएं

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- यदि 2 घंटे में प्रगति न हो तो पशु चिकित्सा अधिकारी को बुलाएं
- स्वयं खींचतान न करें

कठिन प्रसव से होने वाली हानियाँ

- नवजात बच्चे एवं/अथवा माँ के मरने की संभावना अधिक हो जाती है
- यदि बच्चा जीवित पैदा हो तो काफी समय तक सामान्य नहीं हो पाता है
- यदि माँ जीवित रह जाए तो दूध की मात्रा कम रहती है
- गर्भाशय में संक्रमण होने से प्रजनन क्षमता एवं दुग्ध उत्पादन क्षमता कम होने की संभावना अधिक हो जाती है

⚠ पशुपालकों हेतु मुख्य संदेश

कठिन प्रसव एक आपात स्थिति है। समय पर पहचान से माँ और बच्चा दोनों सुरक्षित रहते हैं। अधिक बल प्रयोग से बचें।

- 2 घंटे से अधिक देर = खतरे की घंटी
- गलत खींचतान = माँ बच्चे की जान का जोखिम
- समय पर सूचना = पशु व बच्चा सुरक्षित
- उपयुक्त प्रबंधन = दुग्ध उत्पादन सुरक्षित